सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का रचनात्मक आंदोलन

मई-जून
2026

रेलगाड़ी

बालमन एक्सप्रेस

बच्चों के लिए फुदकती कहानियां ,
रसभरी कविताएं , रंग बिरंगे लेख और नन्हे हाथों
की चटख कलाकारी

बआ

प्रधान संपादक
शरद कुमार वर्मा

SCAN ME

प्रधान संपादक की कलम से

बुके बनाम बुक

प्रिय विद्यार्थियों,

प्रत्येक समाज में विभिन्न अवसरों पर उपहारों के लेन- देन का अवसर वर्ष भर चलता रहता है। हम सभी को अपने साथी को भेंट स्वरूप बुके के स्थान पर बुक अर्थात् किताब दिये जाने की परिपाटी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हम यह जानते हैं कि पाश्चात्य संस्कृति का पर्याय बुके कुछ फूलों-पत्तियों आपस में बांधकर तैयार किया जाता है। जब हम उस बुके को दूसरे को देते है । तो उसकी ख़ुशबू क्षणिक होती है। क्योंकि कुछ समय बाद ही उसके फूल मुरझा जाते हैं । वहीं दूसरी तरफ उपहार में मिली पुस्तक से प्राप्त होने वाली ज्ञान की सुगंध चिर स्थायी होती है।

वर्षों बाद भी भेंट में प्राप्त किताब जब हाथ में आती है तो चेहरे पर एक मधुर मुस्कान दौड़ जाती है। स्मरण हो उठता है कि अमुक अवसर पर उस व्यक्ति के द्वारा सप्रेम प्रदान की गई थी। बुक स्थायी प्रेरणा का स्त्रोत है।

दूसरी ओर पुस्तकों के आदान -प्रदान से पढ़ने-पढ़ाने के पारंपरिक तरीके को बल भी मिलता है। इस बार बस इतना ही...जय शिक्षा, जय शिक्षक, जय शिक्षार्थी!

शरद कुमार वर्मा
(स्टील स्टीलअथॉरिटी ऑफ़ इंडिया द्वारा पुरस्कृत कहानीकार)
शिक्षक ,
रेलवे हायर सेकेंडरी स्कूल ,चारबाग ,
लखनऊ

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
1	पकवान	अनुपम तिवारी	4
2	चलो चले स्कूल	वत्सला पांडे	5
3	कला जंक्शन	कला जंक्शन	6
4	मुझे बनाना है बलवान	अर्पित गुप्ता	7
5	पेड़ न काटो	शिवांकी	8
6	छुट्टी में गांव आना	शरद कुमार वर्मा	9
7	कैसे लिखी मैंने पहली कहानी	महक तिवारी	10
8	बेटी बचाओ	कलात्मक अभिव्यक्ति	11

पकवान

बाल कहानी

"क्या तेरी माँ ने आज भी अचार और रोटी ही दिया है लंच में?" विपिन ने पूछा। "हाँ", सिद्धू ने कहा। उसकी आवाज वैसी ही थी, चहकती हुयी। उसके लिए यह सामान्य सी बात थी।

सिद्धू के पिता बचपन में ही गुजर गए थे। वह अपनी माँ और बाबा के साथ रहता था। माँ एक घर में काम करती थी, सुबह से शाम तक। बाबा बूढ़े थे, पर अभी भी सड़क के किनारे साग-सब्जी बेचकर कुछ न कुछ कमा ही लेते थे। सिद्धू जितना मस्तमौला था उतना ही पढ़ने में भी तेज। हमेशा एक्टिव। थकान तो जैसे उसे छूती भी नहीं थी।

विपिन ने पूछा, "सिद्धू, क्या तेरा मन नहीं करता, अच्छे-अच्छे पकवान खाने का?, अच्छे कपड़े पहनने का? तू रोज एक जैसा खाना खाकर बोर नहीं होता?" "बिल्कुल नहीं।" सिद्धू ने कहा। उसकी आवाज वैसे ही शांत थी। उसने कहा, "खाना पेट भरने के लिए खाया जाता है, न कि स्वाद के लिए, मेरी माँ मुझे यही सिखाती है। पेट तो मेरा रोटी और अचार से भी भर जाता है। रही बात पकवान की तो माँ त्योहार पर बना देती है"

फिर कुछ सोचकर बोला, "मेरी माँ कहती है भूख से बढ़कर कोई पकवान संसार में नहीं है।

- अनुपम तिवारी, शिक्षक
टेक्निकल इंटरमीडिएट कॉलेज ,लखनऊ

कविता

चलो चलें स्कूल

समझो, मीना और रुबीना
बीत गया छुट्टी का महीना
सोना हुआ फिजूल
चलो चले स्कूल
बैग सजा लो, कलम उठा लो
पुस्तक पर तुम कवर चढ़ा लो
करना मत कोई भूल
चलो चलें स्कूल
खेल खेल में पढ़ना सीखें
ज़ोर जोर से कभी न चीखे
मन को रखो कूल
चलो चलें स्कूल
शिक्षा का मंदिर अतिपावन
रिमझिम बरस रहा है सावन
डाली पर खिल उठे फूल
चलो चलें स्कूल
नया ज्ञान निशदिन हम जाने
अच्छी बातों को ही माने
सुंदर जीवन अपना मूल
चलो चलें स्कूल
चलो चलें स्कूल चलो चलें स्कूल.

-वत्सला पांडेय, शिक्षिका, मोंटेसरी इण्टर कॉलेज, लखनऊ

कला जंक्शन

अमन जायसवाल, कक्षा 7

कीर्ति विश्वकर्मा, कक्षा 7

हिमांशी, कक्षा 10

रेलवे हायर सेकेंडरी स्कूल चारबाग, लखनऊ के छात्र -छात्राओं का रचनात्मक कार्य

मुझे बनना है बलवान

मैं जब मैं टी वी पर कार्टून शो देखता हूं तो उनमें दिखाए जाने वाले ताकतवर चरित्र मुझे बहुत प्रभावित करते हैं। मैं उनको देखकर उत्साहित हो उठता हूँ और सोचता हूं कि मुझे भी उनकी तरह शक्तिशाली बनना है। हल्क मेरे मन समा गया है। पल भर में इस कार्टून चरित्र का फोटो बना लेता हूं। आपको राज की बात बताऊं कि कभी कभी हल्क मेरे सपने में आता है और मैं उसके साथ एक्सरसाइज करता हूं। कि एक दिन हल्क की तरह बलिशाली दिखने लगूं । हल्क गुस्से में बाहुबली बन जाता है लेकिन मैं बिना नाराज हुए ही बलवान बनना चाहता हूं।

चित्र एवं आलेख: अर्पित गुप्ता

कक्षा 8, रेलवे हायर सेकेंड्री स्कूल चारबाग, लखनऊ

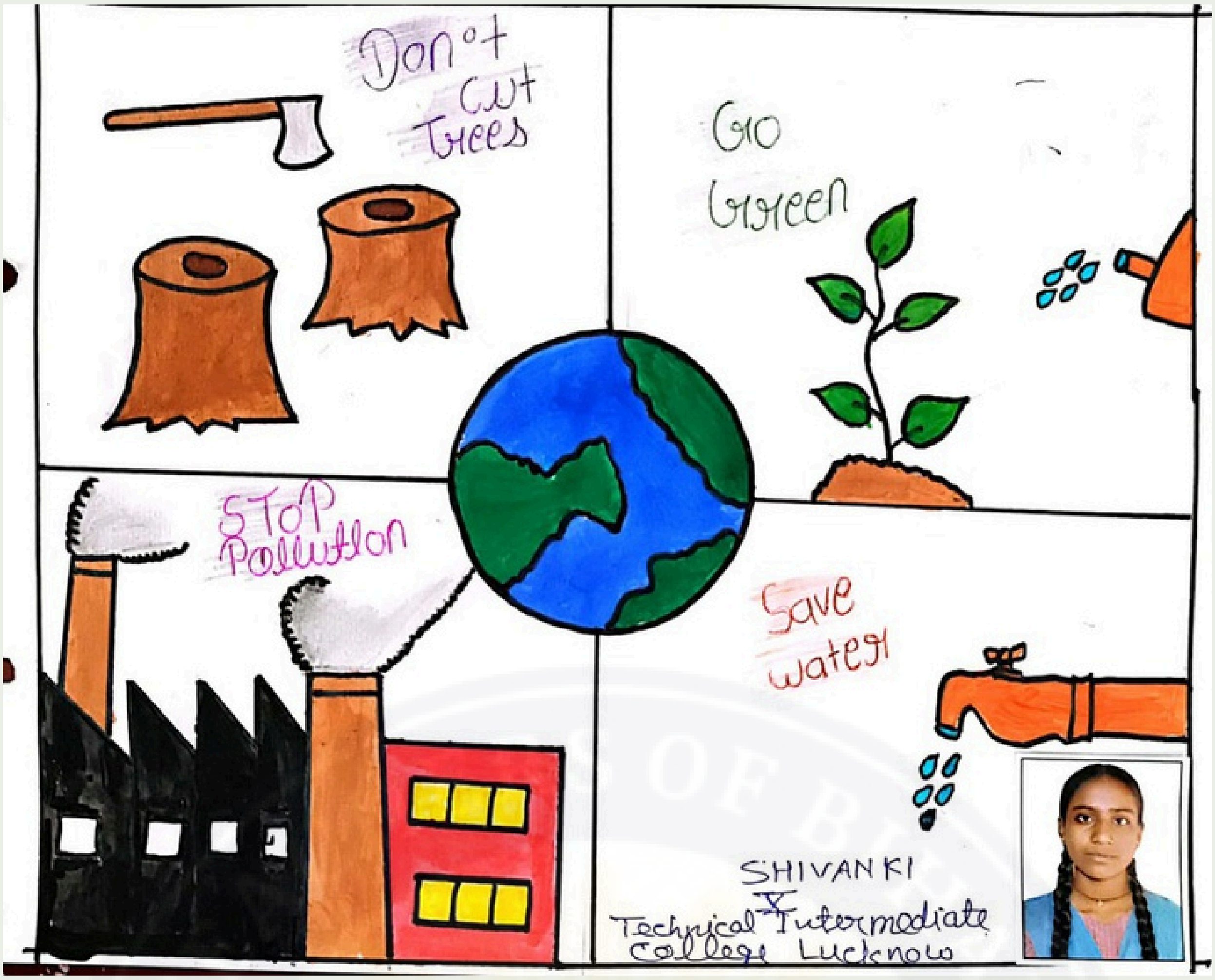

पेड़ न काटो

पेड़ न काटो
पेड़ न काटो
करो जो ऐसा
उसे मिलकर डांटो
पेड़ न काटो
पेड़ न काटो
जीवन को न
टुकड़ो में बाँटो

चित्र एवं कविता: शिवानकी
कक्षा 10 टेक्निकल इंटरमीडिएट कॉलेज ,लखनऊ

कविता

छुट्टी में गांव आना

करना न कोई बहाना
छुट्टी में गांव आना

सैर करेंगे हम दोनों
हरी- भरी पहाड़ी में
कभी साइकिल, कभी पैदल
तो कभी दादा जी की गाड़ी में

तुम मीठी बांसुरी बजाना
छुट्टी में गांव आना

नदिया में मिल तैरेंगे
साथ लहरों के खेलेंगे
डुबकी खूब लगाना
छुट्टी में गांव आना

घूमने हाट में जायेंगे
बर्फ का गोला खायेंगे
चुटकी ले लूं किसी बात पर
तुम मुझ पर न गुस्साना
छुट्टी में गांव आना

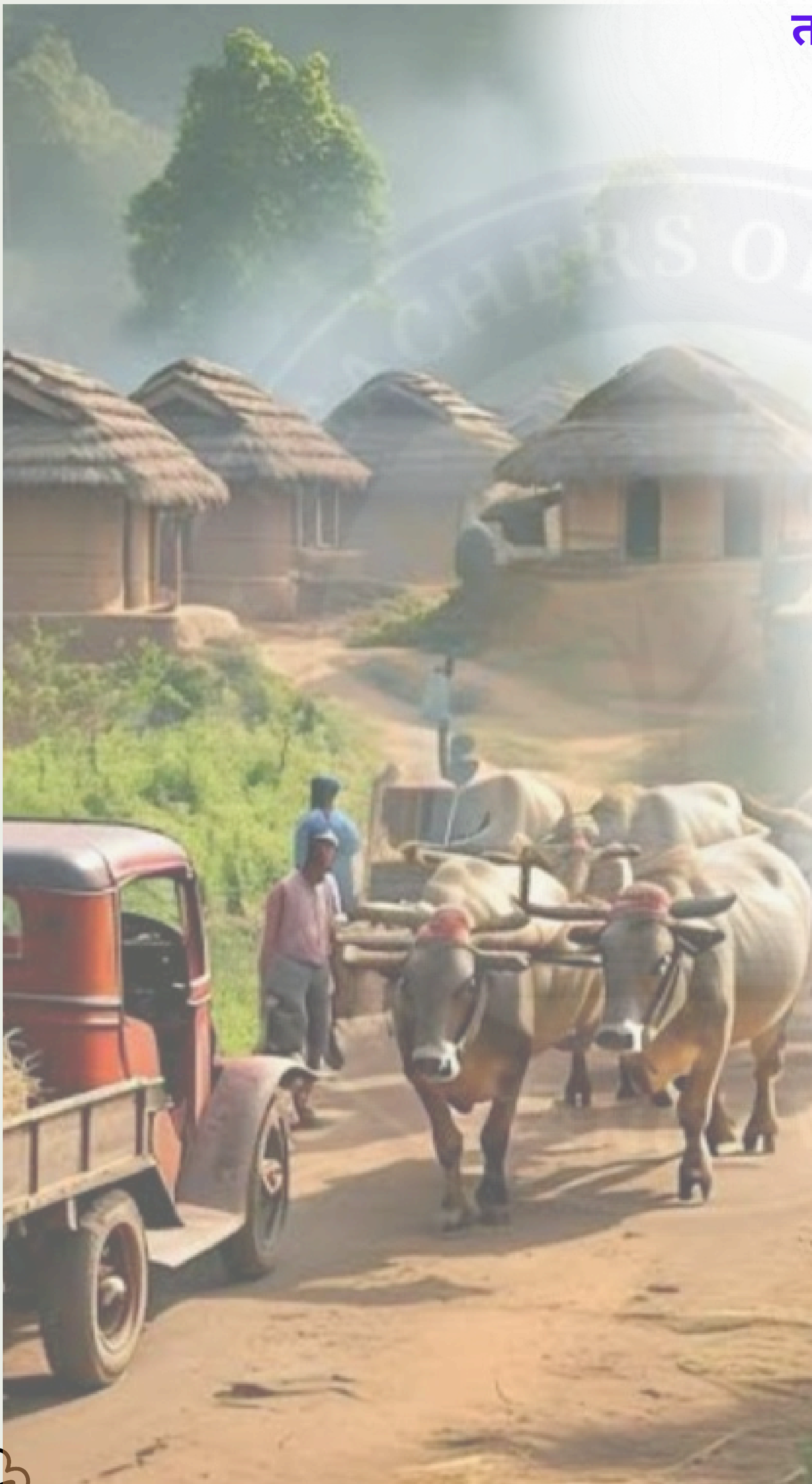

- शरद कुमार वर्मा,
लखनऊ

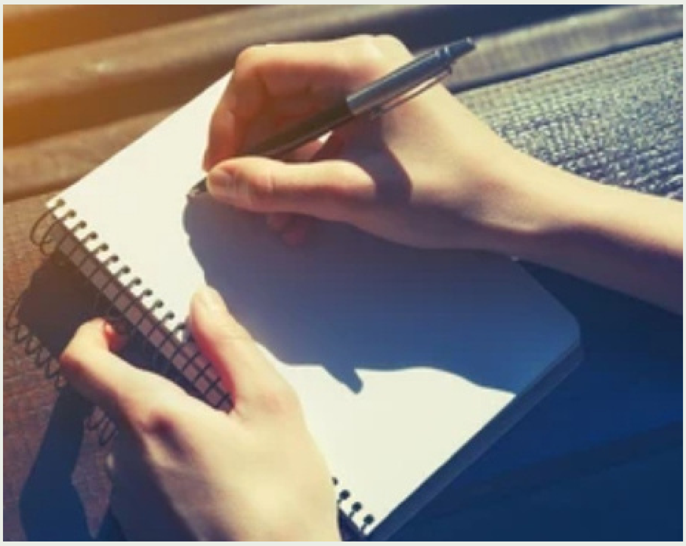

कैसे लिखी मैंने पहली कहानी

मैं आपको अपनी पहली कहानी लिखने की कहानी बता रही हूं। मैं नित्य विद्यालय आती थी तो एक बुजर्ग व्यक्ति मुझसे रास्ते में दिखाई करते थे और मुझसे कहते थे बोलो जय श्रीकृष्ण...। मैं उन अजनबी की बात को अनसुना कर आगे बढ़ जाती थी। एक दिन विद्यालय आते समय जब उन अजनबी व्यक्ति ने जय श्रीकृष्ण कहा, तो मेरे भी मुंह से निकल पड़ा जय श्रीकृष्ण। मेरे ऐसा कहने पर उनके मुख पर मधुर मुस्कान दौड़ गई। उस दिन के बाद वह वृद्ध व्यक्ति फिर कभी नहीं दिखाई दिए। विद्यालय आते समय मेरी नजरे उन्हें ढूंढा करती थीं।

मैंने अपनी यह घटना जब अपने कक्षा अध्यापक को बताई तो उन्होंने मुझसे कहा कि तुम इस पर एक कहानी लिखने का प्रयास करो और मैंने 'वह अजनबी ' शीर्षक से कहानी लिख डाली। जिसे विद्यालय में जिस किसी ने पढ़ा, वह मेरी प्रशंसा किये बिना रह न सका। तब मुझे कि मैं कहानी लिख सकती हूं।

-

-महक तिवारी, कक्षा12, ए पी सेन मेमोरियल गर्ल्स इंटर कॉलेज, चारबाग लखनऊ

बेटी पढ़ाओ... विषय पर छात्राओं की कलात्मक अभिव्यक्ति

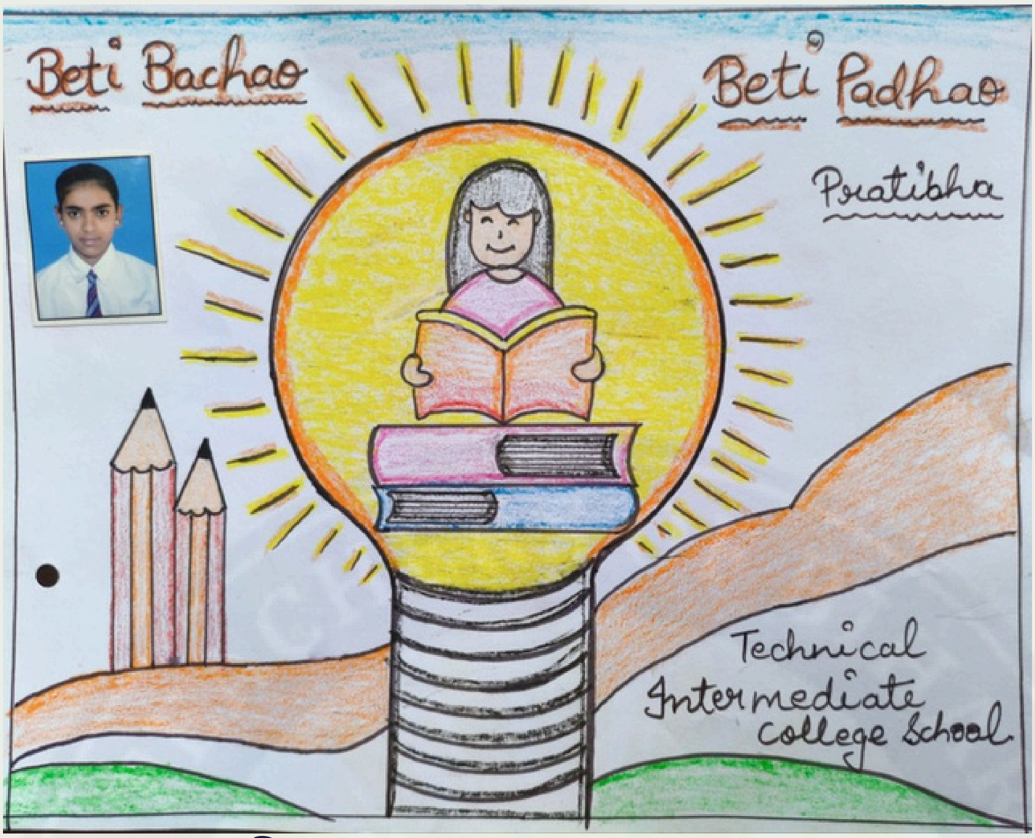

प्रतिभा, कक्षा 9,
टेक्निकल इंटरमीडिएट कॉलेज, लखनऊ

प्रतिज्ञा, कक्षा 8
टेक्निकल इंटरमीडियट कॉलेज, लखनऊ

सिंधी बालिका गर्ल्स इंटरमीडियेट कॉलेज, लखनऊ की छात्राओं की प्रतिभा

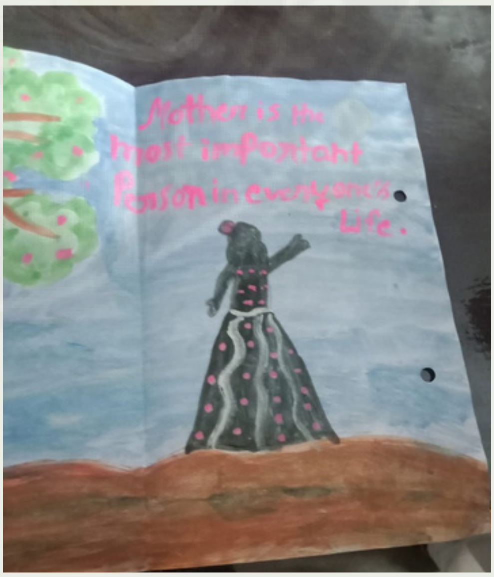

इनसे मिलिए

अमन कुमार जायसवाल

कक्षा 7

प्रत्येक विद्यालय में कुछ छात्र और छात्राएं अवश्य ऐसे होते हैं जिनके मस्तिष्क में रचनात्मक कल्पनाएं बनती बिगड़ती रहती है। इसलिए वे गढ़ते रहते हैं कुछ ऐसी नई- नई आकृतियाँ और खोंजे। ऐसा ही लखनऊ एक छात्र नाम हैं अमन कुमार जायसवाल और पढ़ता है कक्षा 7 में, और करता रहता है नए- नए रचनात्मक कार्य। जिसका प्रकाशन देश की प्रतिष्ठित समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में होता रहता है।

अपने विद्यालय के बच्चों की प्रतिभा को मंच दें!

यदि आप भी उनके लेख, कविता, कहानी, चित्रकला या अन्य रचनात्मक कृतियों को इस पत्रिका में प्रकाशित करवाना चाहते हैं, तो QR कोड स्कैन करें या लिंक पर क्लिक करके WhatsApp समूह से जुड़ें।

SCAN ME

To Join WhatsApp Group

SCAN ME

To Read All Editon

Teachers of Bihar: +917250818080

Sharad Kumar: +91 98382 14110

teachersofbihar@gmail.com

www.teachersofbihar.org